23

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

320- 1236088

	अंकों में	परीक्षार्थी का रोल नम्बर							
-	2	0	3	2	4	6	7	0	0

शब्दों में

-	दो	शून्य	तीन	दो	चार	छः	सात	शून्य	शून्य

उदाहरणार्थ

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 5

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 03 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक-322354

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
नीतू माहौर (हस्ताक्षर)	(हस्ताक्षर)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
R. B. SHARMA Govt. Model H.S.S. Morena V.N.-2015039	PREETI GUPTA Govt. H.S. ... Lal Ka Pura V.No.-2015044

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	

नोट :- "हायर सेकेण्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।"

(2)

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

B
S
E

प्र० क्रमांक (1)

त्तर ! →

महादेवी वर्मा

कबीरदास

सुजान

सावन गीत

चौन के जंगलमे

प्र० क्रमांक (2)

र ! →

छायावाद

श्री कृष्ण

जल शोधन

तीन

(इ) गणेश शंकर विद्यार्थी

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक (3)

उत्तर ! →

(1) असत्य

(2) सत्य

(3) असत्य

(4) असत्य

(5 [illegible]त्य

B
S
E

प्र० क्रमांक (4)

उत्तर ! →
सही जोड़ी –

(अ)	(ब)
(अ) सभी विपत्तियों को हरते है	गणेश जी
(ब) व्यंग्य की प्रधानता	नई कविता
(स) मध्यम वर्गीय परिवार की समस्या	नये मेहमान
(द) कंस की बहन	देवकी
(इ) गांधी करुणा की कहानी है	महात्मा गांधी

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक (5)

उत्तर ! →

(अ) उद्धव जी ।

(ब) भय के दो रूपो मे हमारे सामने आते है → असाध्य रूप, साध्य रूप ।

(स) अन्योक्ति अलंकार

(द) सन् 1953 से ।

(इ) प्रसन्नता और उत्कर्ष को ।

B
S
E

प्र० क्रमांक (6)

उत्तर ! → मीरा अपने स्वामी श्रीकृष्ण के लिए वैरागिन का वेश रखना चाहती है । इसके अलावा वह वही वेश धारण करना चाहती है जिससे श्रीकृष्ण प्रसन्न हो ।

प्र० क्रमांक (7)

उत्तर ! → चातक अपनी बोली के द्वारा विरही हृदय को चोट (दुःख)

प्रश्न क्र.

पहुँचा रहा है। इसलिए कवि ने चातक को घातक कह कर सम्बोधित कर रहा है।

प्र० क्रमांक (8)

(अथवा)

उत्तर ! →

क्षणिक आतंक से तात्पर्य तनिक देर के लिए आए हुए भप से। वह भप एक हि क्षण मे नष्ट हो जायेगा। वह तुम्हारा कुछ भी नही बिगाड़ सकेगा।

प्र० क्रमांक (9)

उत्तर ! →

केवट के अनुसार श्रीराम के पगधुरि का प्रभाव यह है कि उसके स्पर्श से शिला भी स्त्री बन जाती है।

प्र० क्रमांक (10)

(अथवा)

उत्तर ! →

साझँ - सकारे भारत माता की आरती सूरज और चन्द्रमा करते है।

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक (11)

उत्तर ! →

अर्थहानी के भप के कारण बहुत से व्यापारी कभी-कभी किसी विशेष व्यवसाय मे हाथ नही डालते है।

प्र० क्रमांक (12)

उत्तर ! →

चूंकि उसका घर छोटा, घुटन वाला तथा जीवन की सुविधाओं से रहित, जेलखाने की किसी कोठरी जैसा है। अतः वह अपने घर को जेलखाने की संज्ञा प्रदान करती है।

प्र० क्रमांक (13)

उत्तर ! →

मानसिंह तात्या के विश्वसनीप मित्र थे, वे एक वर्ष से दौड़ते-दौड़ते थक गये थे, तथा उनका स्वास्थ्य भी बिगड़ चुका था इसलिए तात्या मान-[illegible] के सरक्षण मे आपे।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्र० क्रमांक (14)

उत्तर ! → उत्तराखण्ड के चार सुप्रसिद्ध धाम पवित्र नदियों के तट पर स्थित है। गंगोत्तरी का मार्ग गंगा नदी के किनारे किनारे, यमुनोत्तरी का मार्ग यमुना नदी के किनारे-किनारे, बद्रीनाथ का मार्ग अलकनन्दा नदी के किनारे तथा केदारनाथ का मार्ग मन्दाकिनी नदी के किनारे - किनारे गया है।

B
S
E

प्र० क्रमांक (15)

(अथवा)

उत्तर ! →

(1) मुहावरा ! → अधजल गगरी छलकत जाए
अर्थ : → गुणो से अधिक बढ़कर बताना।
वाक्य प्रयोग ! → मोहन ज्यादा लिखा तो ज्यादा है नही फिर भी, बुधिमानी की बात करता रहता है, अतः इस पर अधजल गगरी छलकत जाए वाली मुहावरा चरितार्थ होती है।

(2) मुहावरा ! → आँखो पर पट्टी बाँधना

अर्थ ! → अनदेखा करना।

प्रश्न क्र.

वाक्य प्रयोग !→ राम का पुत्र इतना शरारती हो गया है की वह सबको मारता फिरता है, तो पडोसी ने राम से कहा, क्या तुमने अपने "आँखो मे पट्टी बाँध ली" है।

प्र० क्रमांक (16)

उत्तर !→ रौद्र रस !→
अपना अनिष्ट या अनादर होने के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ क्रोध से, रौद्र रस की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण !→

श्री कृष्ण के वचन सुन,
अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूल कर,
करतल युगल मलने लगे॥

प्र० क्रमांक (17)

उत्तर !→ गणेश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित है :→

(1) गम्भीर व्यक्तित्व !→ सधारण कद काठी के स्वामी गणेश शंकर जी का व्यक्तित्व अत्यन्त गम्भीर था।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(2) कुशल राजनीतिज्ञ एवं साहित्यकार :->

शंकर जी अपने जीवन काल में कानपुर शहर के कुशल राजनीतिज्ञ थे। वह धन और वैभव से बहुत दूर रहने वाले व्यक्ति थे।

(3) कला के प्राणशक्तिवान :->

इनमे कला की प्राण शक्ति थी। मजदूरों के संगठन मे स्वयं को पूरी तरह झोंक देना उनके कला के प्रमाण ही तो थे।

B
S
E

प्र० क्रमांक (18)

(अथवा)

उत्तर :->

राष्ट्र भाषा :-> जब कोई भाषा विकसित होकर इतना महत्व प्राप्त कर लेती है, की उसका प्रयोग पूरे राष्ट्र या अन्य भाषा क्षेत्रो मे भी सार्वजनिक रूप से होने लगता है तो वह राष्ट्र भाषा कहलाती है।

राष्ट्रभाषा की दो विशेषताए :->

(1) प्रत्येक राष्ट्र की एक सर्वसम्मत राष्ट्र भाषा होती है।

(2) यह राष्ट्र की सम्पर्क भाषा होती है तथा जनजीवन को प्रभावित करती है।

प्रश्न क्र.

B S E

प्र० क्रमांक (19)

उत्तर ! →

श्लेष अलंकार की परिभाषा ! →

श्लेष का शाब्दिक अर्थ होता है - चिपका हुआ । अर्थात् जब एक हि शब्द में अनेक अर्थ चिपके हुए हो । तथा एक हि शब्द के कई अर्थ निकल रहे हो वह श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण ! →

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून ॥

प्र० क्रमांक (20)

उत्तर ! →

~~छायावाद~~ प्रगतिवाद की दो विशेषताए निम्नलिखित है ! →

(1) शोषितो से सहानुभूति तथा शोषको के प्रति विद्रोह ।

(2) आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल ।

(3) नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति का स्वर ।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रगति वाद के दो प्रमुख कवियों के नाम तथा उनकी एक - एक रचना →

कवि		रचना
1. नागार्जुन	-	प्यासी पथराई आँखे, युगधारा
2. त्रिलोचन	-	धरती, मिट्टी की बारात

प्र० क्रमांक (21)

(अथवा)

उत्तर ! →

क्र.	नाटक	एकांकी
1.	नाटक मे मुख्य कथा के साथ-साथ अन्य प्रासंगिक कथाए भी होती है।	एकांकी में एक हि कथा मुख्य होती है।
2.	नाटक मे विस्तार होता है।	एकांकी मे संक्षिप्तता होती है।
3.	नाटक मे ~~अनेक~~ अनेक अंग होते है।	एकांकी एक हि अंक मे समाप्त हो जाती है।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

4. नाटक मे एक हि घटना तथा एक हि कार्य व्यापार होते है।	एकांकी मे एक हि घटना तथा एक हि कार्य व्यापार होते है।

प्र० क्रमांक (22)

उत्तर :-

कवि परिचय

B
S
E

कवि :- तुलसी दास

(अ) दो रचनाएँ :-

(1) रामचरित मानस
(2) विनय पत्रिका
(3) गीतावली

(ब) भाव पक्ष :-

(1) भक्ति भाव :- तुलसीदास राम भक्ति सखा के प्रमुख कवि है। वे राम की भक्ति करते हुए अन्य देवी देवताओं के प्रति वंदना व स्तुति किया है।

कुल अंक

MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

(ii) समन्ववादी दृष्टिकोण !→
तुलसी दास जी का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक तथा समन्ववादी है।

(iii) दार्शनिक भाव !→
तुलसीदास जी का दार्शनिक विचारधारा किसी मत या वाद से परे है।

(iv) लोकहित की भावना !→
तुलसी दास जी की भक्ति भावना लोकमंगल के भावना से प्रेरित है।

(ब) कलापक्ष !→

(i) भाषा !→
तुलसीदास जी ने अपने काव्याभिव्यक्ति हेतु उस काल मे प्रचलित दोनो प्रमुख भाषाओ - ब्रज और अवधी मे किया है। वे मुख्य रूप से अवधी भाषा के कवि है।

(२) शैली !→
तुलसीदास जी ने अपने काव्यो में उस समय मे प्रचलित सभी शैलियों में काव्य रचना की है। सभी मतो सम्प्रदायों, सिद्धान्तो की कटुता को मिटाकर उसमें समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाया है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
प्रश्न क्र.

(स) साहित्य में स्थान !→

तुलसीदास जी लोक कवि है उनके रचनाओं से जीवन जीने की कला सिखी जा सकती है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' लिखते है !→

कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी पा तुलसी की कला।

B S E

प्र० क्रमांक (23)

उत्तर !→

लेखक परिचय

लेखक !→ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(अ) दो रचनाएँ !→

(1) चिन्तामणि
(2) त्रिवेणी
(3) रस मीमांसा।

(ब) भाषा !→

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत, परिमार्जित एवं शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।

उनकी भाषा में कसावट विद्यमान है, तथा भाषा की इसी कसावट के कारण उसमें समाज शक्ति पायी जाती है। ।

(ii) शैली ! →
शुक्ल जी अपनी शैली के स्वयं निर्माता है, उनकी शैली, सूमास के रूप में प्रारम्भ होकर व्यास के रूप में समाप्त हो जाती है, अर्थात एक वाक्य को सूत्र रूप मे कहकर फिर उसकी व्याख्या कर देते हैं। उनकी शैली मुख्य रूप से चार है ! →

(1) समीक्षात्मक शैली
(2) गवेषणात्मक शैली
(3) भावात्मक शैली
(4) हास्य विनोद एवं व्यंग्य प्रधान शैली ।

(स) साहित्य मे स्थान ! →

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी अपनी असाधारण प्रतिभा द्वारा साहित्य के अनेक विधाओं में अपनी लेखनी से सृजन किया है। उनकी भाषा तथा शैली आने वाले साहित्यकारो के लिए आदर्श है। वे युग प्रवर्तक निबन्धकार के रूप मे सदैव स्मरण किये जायेंगे।

अंक कुल अंक
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक (25)

उत्तर :->
माटी कहै कुम्हार से ------
------ कहु न आपा हाथ ॥

(1) संदर्भ :->
प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'अमृतवाणी' नामक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता 'कबीरदास जी है।

B
S
E

(2) प्रसंग :-> प्रस्तुत पंक्ति मे कबीर दास जी ने यह बताया है, कि संसार तथा यह मानव शरीर नश्वर तथा क्षणभंगुर है।

(3) व्याख्या :->

माटी कुम्हार से कहती है की हे कुम्हार! आज तू मुझे अपने पैरो के नीचे रौंद कर प्रसन्न हो रहा है कल वह समय आयेगा जब मै तुझे अपने नीचे रौंदूगी कहने का तात्पर्य यह है की मृत्यु के पश्चात यह मिट्टी का शरीर मिट्टी मे मिल जाता है। कबीर दास जी कहते है की यह मानव शरीर मिट्टी के कच्चे घड़े के सामान है. जो मृत्यु रूपी वर्षा के बूंदो के पड़ने से टूट जायेगा और हाथ मे कुछ भी नही बचेगा।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

काव्य सौन्दर्य ! →

① भाषा सधुक्कड़ी है, पर सधी हुयी और नीतिपरक है।
② अनुप्रास अलंकार
③ छंद — दोहा
④ शान्त रस।

प्र० क्रमांक (25)

उत्तर ! →

असल प्रकाश तो — — — — — — — — कभी रूकती नही ?

संदर्भ →

प्रस्तुत ~~ब~~ गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'तिमिर गेह मे किरण आचरण' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दुबे जी है।

प्रसंग ! →

अंधकार का विलोम प्रकाश है, और प्रकाश जीवन का ~~जीवन~~ दूसरा नाम है। लेखक ने यहा यह बताया है की वास्तविक प्रकाश तो मनुष्य के कर्म और आचरण मे है।

OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

व्याख्या :→

लेखक यहा यह बताया है की वास्तविक प्रकाश तो मनुष्य के जीवन मे छिपा है और वह सृजन का प्रकाश आदमी का व्यवहार, आदमी का आचरण शील, क्षमा विवेक और भावना जिसे छू लेती है वह प्रकाशित हो जाता है।
और वह बन्द कमरो मे भी बत्ती को यह बताती है की उसे अंधेरे मे भी बन्द नही किया जा सकता है।
गेहूँ के पौधे बड़े होकर मनुष्य को यह बताना चाहते है की निर्माण सदैव विकास की ओर ले जाती है। तभी वह प्रकाशित होकर दूसरो को प्रकाशित करने की क्षमता आती है।

विशेष :→

(1) साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग है।
(2) उद्धरण व व्यास शैली।
(3) संस्कृत शब्दावली के साथ भाषा मे प्रवाह।

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 19 के अंक कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्र० क्रमांक (26)

उत्तर :→

(अ) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक :→ शिक्षा का उद्देश्य।

(ब) सही श्रम वह है, जो कुछ ठोस तथा वंछित परिणाम देता है।

(स) कर्मठता वह है. जो लय की निश्चित अभिलाषा एंव सतत प्रयत्न के समन्वित स्वरूप मे होता है।

सही कर्मठता वह नही है, जो कुछ वंछित तथा ठोस परिणाम न दे. बल्की कर्म तथा श्रम वह है जो कुछ ठोस तथा वंछित परिणाम देता है।

और जिस देश में जितना कर्मठता का प्रतिशत होता है वह देश उतना हि प्रगति अथवा गतिशील होता है। अतः उस देश मे कर्मठता तथा श्रम को बढ़ाना हि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक (27)

उत्तर ! →

सेवा मे,
सचिव माध्यमिक शिक्षा मण्डल
भोपाल,

विषय → अंग्रेजी विषय की उत्तर पुस्तिका का पुनर्गणना हेतु आवेदन पत्र ।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैंने हाल हि मे राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भोपाल द्वारा कक्षा 12 वी परीक्षा अनुक्रमांक 3307801 द्वारा अच्छे अंको से उत्तीर्ण की हूं, लेकिन अंग्रेजी विषय में आशानुरूप अंक न आने के कारण मै प्रथम श्रेणी मे नही आ पायी हूं, मेरी अंग्रेजी विषय की परीक्षा बहुत अच्छी हुई थी। मेरे आकलन के अनुसार मेरे 70 / 75 अंक आने चाहिये जबकि आये मात्र 45। अतः प्रार्थी के अंग्रेजी विषय की पुस्तिका का पुनर्मुल्यांकन हेतु कृपा करे।
आपकी अति कृपा होगी,

B
S
E

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रार्थी
सौरभ सिंह
54 / नया बाजार सतना

प्र० क्रमांक (28)

(a)

उत्तर :- रूपरेखा :→

(iv) जल ही जीवन है।

(1) प्रस्तावना
(2) जल का महत्व
(3) जल के विभिन्न स्त्रोत
(4) जल का आभाव
(5) जल के कमी के कारण
(6) बढ़ती हुयी जनसंख्या वृद्धि में जल
(7) आपूर्ती की समस्या
जल
(8) वृक्षारोपण
(9) जल समस्या का समाधान
(10) उपसंहार ।

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

(अ)

उत्तर :→

निबन्ध :→

(iv) विज्ञान और मानव जीवन

(1) प्रस्तावना :→ वर्तमान युग में सभी क्षेत्रो में विज्ञान के चमत्कार, तथा उसके प्रभाव की गूज है। विज्ञान और मानव जीवन में आज पारस्परिक निर्भरता बढ़ती जा रही है। मानव ने आज विज्ञान को इतना महत्व दे दिया है कि उसके बिना मानव जीवन आधुरा लगने लगता है।

B
S
E

(2) विज्ञान के बढ़ते कारण :→

विज्ञान के आज बढ़ते कारणो में सबसे महत्वपूर्ण कारण मानव तकनीक तथा उसकी अनोखी बुद्धि का कारण है।

(3) चिकित्सा के क्षेत्र मे विज्ञान :→

आज विज्ञान के बढ़ते प्रभाव के कारण इसका प्रभाव चिकित्सा मे भी

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

देखनेको मिलने लगी है। वैज्ञानिक आज विभिन्न उपकरणो के द्वारा चिकित्सा मे नये - नये उपकरणो द्वारा चिकित्सा को और सरल तथा उत्तम बना रहा है। आज विज्ञान के कारण वैज्ञानिक गोल्ड पर्टीकल ट्यूमर सेल्स को निर्माण कर रहे है जो कैंसर की समुची प्रक्रिया को ही बदलने मे सक्षम होगा।

(3) कृषि मे विज्ञान :→

आज विज्ञान के फलस्वरूप नये - नये तथा विभिन्न प्रकार के उर्वरको तथा खादो एवं रासायनिक कीटनाशको का निर्माण कर कृषि उत्पादकता को बढ़ने मे सहायक हो रहे है। आज विज्ञान के कारण कृषि उत्पादन मे वृद्धि होने के कारण सूखा, तथा अकाल मे होने वाली मौत को रोका जा सकता है।

(4) विज्ञान एवं पर्यावरण :→

विज्ञान एवं वातावरण मे एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। विज्ञान आज इतना विशाल हो गया है कि वह, वातावरण तक को

प्रश्न क्र.

प्रभावित करने लगा है। तथा इसमे होने वाले सभी परिवर्तनो से वातावरण तथा पर्यावरण मे प्रभाव पड़ता है।

(6) विज्ञान के विभिन्न चरण! →

विभिन्न कारणो से विज्ञान एवं उसके चरणो मे भी आज बहुत परिवर्तन हो गया है। पहले विज्ञान कुछ हि क्षेत्रो तक सीमित था तथा वह कुछ भागो को अपना प्रभाव क्षेत्र बनाये रखा था। लेकिन आज उसका क्षेत्र अति विशाल तथा व्यापक हो गया है।

(7) यातायात के साधनो पर विज्ञान का बढ़ता प्रभाव! →

यातायात के विभिन्न साधनो पर विज्ञान ने अपना प्रभाव डाला है। अतिदूरगामी एवं तीव्र गामी साधनो के द्वारा मानव जीवन अत्यन्त सुखद हो गया है। इसके प्रभाव के कारण आज वायुयान तथा जलयानो पर पड़ने लगा है।

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी	02 03 2020

उत्तर पुस्तिका का क्रमांक 120 - 1377992

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2 0 3 2 4 6 7 0 0

शब्दों में: ... तीन दो चार छः सात शून्य शू...

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हा० से० सर्टि० परीक्षा

केन्द्र क्रमांक-322354

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

नीता मिश्रा

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक .... तक कुल प्राप्तांक 90 + — = 90

(ii) विज्ञान के लाभ ! →

विज्ञान ने मानव जीवन को ~~अत्यन्त~~ विलासपूर्ण बना दिया है। तथा यह एक बेहद महत्वपूर्ण अंग बना चुका है मानव हिस्सा का।

(iii) विज्ञान के दुष्परिणाम ! →

~~जहाँ~~ विज्ञान ने अपनी विशेषताओ ~~और~~ उपयोगिताओ के कारण मानव जीवन को समृद्धि किया है, वही उसके अनेक दुष्परिणाम भी है, जो जीवन तथा सम्पत्ति को नष्ट भी कर सकते है। लेकिन विज्ञान अपने मे कुछ नही है यह मानव के हाथ पर निर्भर करते है।

आज विज्ञान के दुष्परिणाम का विषय कार्य है की यह यातायात तथा संसाधनों होने वाले विध्वंशकारी गतिविधियों के कारण वातावरण इतना प्रदूषित हो गया है। मानव जीवन खतरे में पड़ गया है।

यातायात के बढ़ने से दुर्घटनाओ में इतनी वृद्धि हो गयी है, लगभग हर दिन जनसंख्या का एक बड़ा भाग इन घटनाओ से प्रभावित हो रहा है। तथा इन घटनाओ से प्रताडित हो रहा है।

उपसंहार :->

हर पहलु के दो पहलु तथ्य पट होते है इसी तरह विज्ञान भी कुछ लाभ से संबंधित किया तो अनेक विध्वंस कारी गतिविधियो से मानव जीवन प्रताडित किया है। अतः विज्ञान की सफलता तथा उसका लाभ मानव के हाथ में। यदि विज्ञान का अनुसाशन तथा सीमित मात्रा में प्रयोग किया जाये तो।

इससे होने वाले दुष्परिणाम को कम किया जा सकता है। इससे मानव तथा विज्ञान के मध्य के सम्बन्ध मधुर तथा उपयोगी एवं आनन्ददायक बना देगा।